डा. वसंत केशव मोरे
MA, Ph.D.

हिन्दी विभाग
शिवाजी विद्यापीठ
कोल्हापुर.
दिनांक : 25-11-1988

प्रमाणित किया जाता है कि कु. संजोत रमेश राजूरकर ने मेरे निर्देशन में सन् 1986-87 की एम्. फिल ⟨हिंदी⟩ परीक्षा के लिए "उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में नारी जीवन का चित्रण" शीर्षक से प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध पूरा किया है । यह परीक्षार्थी की मौलिक कृति है । मैं संस्तुति करता हूँ कि इसे परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए ।

निर्देशक

(डा. वसंत केशव मोरे)

कोल्हापुर

अधिष्ठाता, कला संकाय
शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर

UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

भूमिका

एम्. फिल की उपाधि के लिए प्रस्तुत "उषा प्रियवंदा के उपन्यासों में नारी जीवन का चित्रण" मेरे इस शोध प्रबंध में मैंने निम्न प्रश्नों के उत्तर अनुसंधान द्वारा खोजने का यत्न किया है । ǁ1ǁ उषा प्रियवंदा के उपन्यास नायिका प्रधान क्यों है ? ǁ2ǁ उषाजी के उपन्यासों में नारी की कौन सी विशेषताओं का चित्रण किया गया है ? और किस प्रकार ? ǁ3ǁ उषाजी ने अपने हर एक उपन्यास में किस प्रकार की नारी की समस्याओं का चित्रण किया है ? ǁ4ǁ उषाजी के विभिन्न उपन्यासों में नारी चित्रण के विकास का कौन-सा क्रम दिखाई देता है ? उषाजी के नारी के प्रति दृष्टिकोण के इस अध्ययन में एक आधुनिक लेखिका होने के नाते उषाजी पर आलोचनात्मक साहित्य मिलना एक कठिन समस्या थी । उषाजी के साहित्य पर अन्वेषणात्मक अध्ययन की भी कमी होने के कारण, आधार रूप में कोई भी मत या दृष्टिकोण नहीं मिल सका । अतः मेरे अपने मत और विचार ही मौलिक रूप से इस शोध प्रबंध में प्रस्तुत हुए हैं ।

अध्ययन द्वारा अपनी जिज्ञासा का शमन करने के इस प्रयत्न में मुझे अनेक महाभागों का सहकार्य प्राप्त करने का सौभाग्य मिला है । इनमें प्रथमतः मेरे आदरणीय गुरूदेव डॉ. वी. के. मोरेजी हैं जिनके सुचारू मार्गदर्शन के मातहत मैं अपने कार्य की सिद्धता प्राप्त करने में समर्थ हो सकी । मेरे अन्य प्रमुख गुरूदेवगण डॉ. वी. वी. द्रविड़ जी, प्रा. रजनी भागवत जी, प्रा. कणखरकर जी, डॉ. देवेश ठाकुर जी इन्होंने मुझे अपने आशिर्वाद से प्रोत्साहित करते हुए जो मार्गदर्शन किया वह अत्यंत मौल्यवान है, जिसके लिए मैं उनकी सदा कृतज्ञ रहूँगी । इसके साथ ही मेरे पूज्य माता-पिताजी, बंधू एवं मेरे मित्रवर्ग का सहकार्य मेरे इस ध्येय को प्राप्त करने में केवल अवर्णनीय है जिसके लिए उन्हें धन्यवाद देना एक औपचारिकता मात्र हो जाएगी ।

प्रबंध को साकार रूप देने में भारतीय रिज़र्व बैंक की डॉ. राजरानी जी, श्री टोपरे जी और बैंक के मेरे अन्य सहकारी गणों की मदद विशेष उल्लेखनीय रही है । मैं उन सभी सहृदयों के प्रति धन्यवाद प्रकट करती हूँ जिनका प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रीति से मेरी सफलता में सहभाग रहा है ।

संगीता राजुरकर
[कु. संगीता राजुरकर]

विषय-सूची

"उषा प्रियवंदा के उपन्यासों में नारी जीवन का चित्रण"

1§ उपन्यासकार उषा प्रियवंदा

2§ उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में चित्रित आधुनिक नायिकाएँ

3§ उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में चित्रित नारी समस्याएँ

1. सामाजिक 2. पारिवारिक

3. आर्थिक 4. मनोवैज्ञानिक

4§ उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में नारी जीवन का चित्रण

1. भारतीय और पाश्चात्य संस्कारों से प्रभावित द्विधावस्था की नारियाँ
2. उच्च वर्ग की नारियाँ
3. उच्च-मध्य वर्ग की नारियाँ
4. मध्य वर्ग की नारियाँ
5. निम्न वर्ग की नारियाँ
6. किशोरियाँ

5§ उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची